The Knowledge Spectrum an International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3107-3557 (Online)

रामकाव्य का आधुनिक स्वरूप

Dr. Mamata Sharma
Principal
Vivekanand Arts College Ahmedabad

रामकाव्य भारतीय चिन्तन का वह मेरूदण्ड है जिससे कला, साहित्य, दर्शन और मनोविज्ञान की अवधारणाओं के सूत्र प्रेरणा पाते हैं। विभिन्न कालों की आध्यात्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक अवधारणाएं राम कथा के सनातन प्रतीक-पुरुषों के माध्यम से ही अपने युग के प्रश्नों प्रति प्रश्नो का समाधान खोजती रही हैं। प्राचीन तथा मध्ययुग से ही अपने युग के इन प्रश्नों का समाधान अध्यात्म तथा भक्ति की कुक्षि से जन्म लेने वाली ईश्वरीय आस्था में खोजता रहा है। तो आधुनिक वैज्ञानिक की सप्रश्न दृष्टि भी वर्तमान युग के जटिल प्रश्नों के उत्तर के लिए इन्हीं सनातन प्रज्ञा-पुरूषो की ओर देखती है। सारी सृष्टि में राम युग-युग से सात्त्विक रसिक जनों की रस-साधना का केन्द्र बने हैं। राम हमारे सुपरिचित हैं, इतने कि प्रत्येक जन सामान्य में न तो उनके सम्बन्ध में कोई संशय है, न कौतूहल, उनके जीवन से सम्बद्ध प्रत्येक घटना जनमानस के लिए नेत्र मूँद कर विश्वास किया जा सकने की सीमा तक प्रामाणिक है। रामकाव्य साहित्य और संस्कृति का समन्वय है ।

साहित्य के माध्यम से संस्कृति की अभिव्यक्ति सर्वप्रथम वाल्मीकि रामायण में हुई है। रामायण भारतीय संस्कृति की अन्यतम कृति है। यह भारतीय संस्कृति की द्योतक है | यह ग्रंथ आज भी संस्कृतिक आदर्श के रूप में प्रस्थापित है | वाल्मीकि कृत रामायण से आधुनिक हिन्दी साहित्य तक रामकाव्य की सुदीर्घ परम्परा रही है। छान्दस वाङ्मय से निःसृत होने वाली रामकाव्य की धारा संस्कृत वाङ्मय को पार करती हुई प्राकृत वाङ्मय में प्रवेश करती है। 'बौद्धत्रिपिटक' में तथा 'जातकों में रामकथा के दर्शन होते हैं। जैन परम्परा में 'विमलसूरी' का 'पउमचरिय', 'शीलांक' का 'महापुरिसचरियं', आचार्य 'भद्रेश्वरसूरी' की 'कुहावली', 'सीय चरियं', 'स्वयंभू' कृत 'पउमचरिउ', 'पुष्पदंत' रचित 'महापुराण', 'रहल्ल' का 'पद्मपुराण' रामकाव्य की परम्परा को विकसित करते हैं। रीतिकालीन रामकाव्य में केशवदास की 'रामचंद्रिका' के अतिरिक्त सेनापति रचित 'कवित्त रत्नाकर', लालदास की 'अवध विलास', 'रामचन्द्र लीला-चरित', 'मंडन-जनकपचीसी, सुखदेव मिश्र कृत', 'दशरथराय' सहित अनेक कृतियाँ उपलब्ध हैं, जिनमें रामकथा से संबंधित अंशों के माध्यम से भारतीय संस्कृतिक मूल्यों के प्रतिस्थापन का प्रयास हुआ है। आधुनिक हिन्दी रामकाव्य में खड़ी बोली की रामकाव्य पर प्रथम कविता भारतेन्दु रचित 'दशरथ विलाप' उपलब्ध होती है।

हिन्दी रामकाव्य परम्परा में तुलसीदास से पूर्व यत्र-तत्र रामकथा से संबंधित अंश मिलते हैं। यहाँ तक की निर्गुण संत काव्य में भी 'राम' का नाम चर्चित है। तुलसीदास के युग तक भारतीय संस्कृति विदेशी अक्रमणों से छिन्न-भिन्न हो गई थी। तुलसी ने भारतीय संस्कृति के आदर्शों की पुनर्प्रतिष्ठा की। 'रामचरितमानस' में समाज के उत्तमोत्तम आदर्श, नैतिक विधान, सामाजिक सुव्यवस्था, जीवन के उदात्त रूप आदि पर बल दिया गया। आदर्श पुरुष, आदर्श परिवार, आदर्श समाज, आदर्श राज्य एवं आदर्श युग की प्रतिष्ठा का प्रयास इसमें हुआ है।

राम काव्य के सगुण भक्ति मार्गीय कवियों ने राम के चरित को लेकर उनके व्यक्तित्व को जनता तक पहुँचाया है। राम करुणासागर हैं। शरणागत की

रक्षा करते हैं। अन्याय के विरोध में खड़े होते हैं। क्या ऐसा नहीं है कि रामकाव्य के रचयिता समय की सीमाओं के भीतर राम का मर्यादावादी रूप उभारते हुए भी उनके माध्यम से अपने विद्रोही चेतना को अभिव्यक्ति दे रहे थे। कलियुग के वर्णन से तुलसी मध्यकाल के विचलित समाज का संकेत करते हैं-

" जासु राजुत्रिय प्रज्ञा दुखारी
सो नृप अवस नरक अधिकारी।"

इस प्रकार के रामकाव्य में राम व्यक्ति चरित्र न होकर सामाजिक मर्यादाओं और मानवमूल्यों के सर्वोत्तम प्रतीक है। रामकाव्य अपनी मर्यादाओं की रक्षा करता रहा शालीनता के साथ और अपनी आदर्शवादी सीमाओं में उसने सामाजिक चेतना को अभिव्यक्ति दी। राम काव्य का जितना व्यापक प्रणयन आधुनिक युग में हुआ है। वह अपने वैशिष्ट्य की दृष्टि से मध्ययुगीन रामकाव्य की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण है। यदि तुलसीदास के रामचरितमानस को छोड़ दिया जाए तो अन्य रामकाव्य युगान्तकारी संवेदना अथवा अभिनव प्रतिमानों की दृष्टि से कोई विशिष्ट आयाम प्रस्तुत नहीं करते। रामकथा का विशाल वाङ्मय भारत में ही नही लंका, सुमात्रा, हिन्द ऐशिया, जावा आदि द्वीपसमूहों के रामकाव्य में व्याप्त है। आधुनिक रामकाव्य के पूर्व रामकथा सम्बन्धी प्रबन्ध काव्यों की एक लम्बी कड़ियाँ मिलती है। इन्हें वाल्मीकि द्वारा निर्दिष्ट कथा सोपानों में समाविष्ट किया जा सकता है। आधुनिक रामकाव्य एक युगदर्शन और विशिष्ट युग की अभिव्यक्ति है। इसलिए उन सभी भिन्नताओं का वर्णन करना उसी समय तक प्रासंगिक और आवश्यक है जहाँ पर उस जीवदर्शन के गुणात्मक परिवर्तन को संदर्भित करती है। आधुनिक रामकाव्य में कथा परिवर्तन एवं उद्भावनाएँ प्रायः चारित्रिक और जीवनदर्शन की आधारभूमि पर हुई है। इसमें उपेक्षित पात्रों के अस्तित्व की पुन:प्रतिष्ठा लांछित पात्रों के प्रति सुहानुभूति और उनकी कलंक मुक्ति के प्रयास प्रतिपाद्य एवं प्रतिनायक के चारित्रिक गुणों का उल्लेख, तर्कशील आर्दा पात्रों के नैतिक अन्तर्द्वन्द एवं क्षणिक दुर्बलता के लिए आधुनिक कवियों ने रामकाव्य के परम्परित इतिवृत्त का पुनः संस्कार किया है।

आधुनिक युग में दूसरी तरफ जिन अवधारणाओं ने प्रेरित किया है। उसने प्रभावित हुए कवि कथा में परिवर्तन एवं परिवर्द्धन की तरफ उन्मुख हुए हैं। मार्क्सवाद मनोविश्लेषण, विकासवाद (डार्विन) आस्तिववाद आदि अवधारणाओं का प्रभाव आधुनिक युगचिन्तन पर अत्यधिक पड़ा है। जिसके कारण कवियों ने रामकाव्य को कृषि-संस्कृति, अवचेतन की दमित कुण्ठा, अर्थ विषमता, अस्मिता का संकट आदि के विश्लेषण के लिए उपकरण रूप में विवेचित किया है।

आधुनिक हिन्दी रामकाव्य में राम के माध्यम से ही आज की सामाजिक विषमता, आर्थिक शोषण, अछूतोद्धार, नारी जागरण व सामाज्यवादी भवना के प्रति आक्रोश प्रकट हुआ है। आधुनिक रामकाव्य में राम का स्वप्न आदर्श राज्य है। उनकी आदर्श कल्पना में सर्वत्र समता का ही राज्य है। राम का चरित्र शोषण-विरोधी रूप में प्रकट हुआ है यथा-

"मैं अग्नि पुरुष शोषण को स्वयं मिटाऊँगा
नृप अनाचार को मैं समाप्त कर पाऊँगा।
भू से कुरीतियाँ मिटें यही मैं चाह रहा
मेरी वाणी ने शोषक को क्या-क्या न कहा।"[1]

वर्तमान युग प्रजातंत्रीय युग है। आधुनिक रामकाव्य धारा में राम-रावण का युद्ध साम्राज्यवाद और प्रजातंत्र के मध्य का युद्ध है। राज्यसता प्रजा की थाती है। शासक केवल लोकसेवक मात्र है। राज्य शासक की सम्पत्ति नहीं है। राम के राज्य में प्रजातंत्र

शासित होता था। राम स्वयं सभी प्रकार के आत्मसंयम और आत्मपीड़ा को सहन करके लोकमत की रक्षा करते हैं। उनकी दृष्टि में राजा द्वारा प्रजा का भाग्य निर्माण होता है। राज्य पर जनता के अधिकारों का समर्थन करती उक्त पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं-

"है स्वायत्त स्वत्व जनता का, राजा का अधिकार नहीं,
शक्ति देश की एक प्रजा है, तोप तीर तलवार नहीं।
वह जिसको निर्णीत करेगी, वही देश का शासक होगा
उसकी इच्छा के विरुद्ध, कुछ भी नहीं भरसक
होगा|"[2]

राम द्वारा प्रजातांत्रिक मूल्यों की स्थापना का निरन्तर प्रयास हुआ। लक्ष्मण का उक्त कथन प्रमाण है-

"बन्धु अग्रज हैं
परिजन और पुरजन प्रिय भाजन हैं,
साथ ही हम प्रजा के
मनोनीत राजन हैं।"[3]

इस पदार्थवादी युग मे जब पारिवारिक मूल्य विघटित हो रहे हो, कौटुम्बिक आदर्श विरासत में रह गये हो और व्यष्टिवादिता हमारे जीवन का अंग बन चुकी हो, तब इस काव्य धारा में राम पारिवारिक मर्यादाओं की स्थापना के पक्षपाती नजर आते हैं। राम और भरत का अभेद कौशल्या के विशाल हृदय एवं उदात्तवृति का परिचायक है। यथा-

"तू वही है, भिन्न केवल नाम
एक सहृदय और एक सुगात्र
एक सोने के बने दो पात्र |"[4]

आधुनिक हिन्दी रामकाव्य धारा में नारी को एक नवीन औदार्यपरक दृष्टि प्रदान की। नारी अब हाड-मांस की पुतली और भोग्या मात्र न रहकर अपने कर्तव्य के प्रति सचेष्ट है। कैकेयी, सीता, उर्मिला, माण्डवी, अहल्या आदि नारी पात्रों के माध्यम से इस दृष्टिकोण का पर्याप्त विवेचन इस काव्य धारा में हुआ है। नारी जागरण के फलस्वरूप अब नारी युग की सजग चेतना बनकर उपस्थित हुई है-

"मैं न राम को माँग रही हूँ, माँग रही है जिसकी वाणी,
वह है युग की सजग चेतना, महाशक्ति युग की
कल्याणी।"[5]

साथ ही कवियों ने नारियों को अपने बल नर क्राति करने का आह्वान भी किया। उसे कृत्रिम आवरणों को तोडने, भय से मुक्त होने, सन्तुलन न खोने और सत्य कांति का स्वर दिया-

"अपने बल पर नारी! तुझे जागना होगा,
कृत्रिम आवरणों को, तुझे त्यागना होगा।
खो संतुलन भीत हो नहीं, भागना होगा,
सत्य क्रांति का अभिनव, अस्त्र दागना होगा।"[6]

आज का मानव भाग्यवादी नहीं रह सकता, उसे अपने पुरुषार्थ के माध्यम से ही सर्वस्व प्राप्त करना होगा। यदि कर्म नहीं तो प्राणों का अस्तित्व ही नहीं। कर्म के अभाव में जगत का कल्याण भी असंभव है। निरन्तर प्रगति के पथ का वरण आज के मनुष्य का लक्ष्य रहना चाहिए। राम-काव्य यह प्रेरणा देता है कि मानव के कार्य में यदि सिन्धु बाधा बन कर आएगा तो उसे भी सोख लिया जाएगा-

"लंका यदि ध्रुव पर भी होती तो
भाग नहीं पाती बन्धु
लक्ष्मण के पौरुष से
कर्म की चुनौती
मुझे स्वीकार है।"[7]

समस्त विश्व के साथ मित्र भाव से रहना ही विश्वमैत्री है। वर्तमान संदर्भ में राष्ट्रीयता केवल अपने देश तक सीमित नहीं है। जिस प्रकार वैदिक काल में 'भूमा भाव' था तथा वसुधा को ही कुटुम्ब मानने की भावना मिलती है, वही भावना आधुनिक हिन्दी

रामकाव्य में भी मिलती है। इसमें राम अपनी स्नेह भावना को संपूर्ण विश्व के लिए प्रकट करते हैं, निदर्शन दृष्टव्य है-

"क्या जन्मभूमि मेरी पुनीत,
बस लंका तक ही है समाप्त
या भूतल में सर्वत्र व्याप्त ।"[8]

आधुनिक हिन्दी रामकाव्य ने उस वर्ण-व्यवस्था का विरोध किया है, जो कर्म पर आधारित न होकर जाति पर आधारित हो। व्याक्त का महत्त्व होना उसके युग-कर्म पर निर्भर करता है। आज का रामराज्य समान दृष्टि वाला समाज है। 'शबरी', 'शंबूक' जैसे पात्रो को लेकर लिखी जाने वाली रचनाएँ वर्ण-व्यवस्था की परम्परित रुढ़िबद्ध विचारधारा के प्रति आक्रोश को प्रकट करती है और नये मूल्य प्रतिस्थापित करती है, यथा-

"जो व्यवस्था व्यक्ति के सत्कर्म को भी मान ले
अपराध /
जो व्यवस्था फूल को खिलने न दे, निर्वाध ।
जो व्यवस्था वर्ग सीमित स्वार्थ से हो ग्रस्त।
वह विषम / घातक व्यवस्था/ शीघ्र ही हो / अस्त ।"[9]

त्रेतायुग के रामराज्य की व्यवस्था ही आदर्श शासनव्यवस्था है, जो वर्तमान का पथ-प्रदर्शन करने में सक्षम है। आदर्श शासन में न्यायतंत्र, दण्ड व्यवस्था, प्रजा के अधिकार, कर्तव्य आदि पर संतुलित दृष्टि अपनाई जाती है। आदर्श शासन में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता होती है, किन्तु इस स्वतंत्रता का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए-

"अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य का अर्थ यह नहीं होता कि /
हम व्यक्तिगत राग-द्वेषों / आधारहीन अभिमतों /
वक्तव्यों और शंकाओं को सार्वजनिक रूप से /
आक्षेपात्मक वाणी दें।"[10]

आधुनिक हिन्दी रामकाव्य वंदना, उसका देवीकरण, भाषा ने स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रीयभावना का घोष किया। राष्ट्रीयता का यह रूप आधुनिक है। इनमें चेतना की व्याप्ति है। मातृभूमि संस्कृति के प्रति प्रेम, स्वदेश की भावना विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त हुई। रामकाव्य में मातृभूमि के प्रति सम्मान की भावना यत्र-तत्र अभिव्यक्त हुई। रावण का कथन-

"वानर से डरने वालों को, लंका जगह न दे सकेगी
उनके निष्फल जीवन का, बोझ न शीश पर ले
सकेगी।"[11]

युद्ध और शान्ति की समस्या इस युग की देन है। आज का कवि युद्ध को एक विवशता मानता है। बिना सोचे हुए कारणों, सामाजिक दया, यथार्थ के दुराग्रहों तथा काल्पनिक इच्छाओं के सम्मुख न चाहते हुए भी मनुष्य को नतमस्तक होना पड़ता है, और अमानुषी कृत्य करने पड़ते हैं। सामाज्यवाद वृत्ति से जब लघु मानव त्रस्त होता है, तब युद्ध का आविर्भाव अनायास हो जाता है-

"हम साधारण जन / युद्ध प्रिय थे कभी नहीं
और न लंका युद्ध लड़ेंगे / युद्ध भाव से ।
महाराज / साम्राज्य वृत्ति के द्वारा
हम साधारण जन / अर्ध सभ्य कर दिए गए। "[12]

आधुनिक युग में रामकथा का प्रणयन क्यों हुआ? इस पर डॉ.प्रमिला अवस्थी का अभिमत है- "विचारपक्ष पर बढ़ने से ज्ञात होता है कि भारत अपनी सांस्कृतिक हार स्वीकार कर जब पाश्चात्य की ओर बढ़ रहा था, उसे अपनी संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान और शक्ति का भरोसा न रहा था, तब रामकाव्य प्रणेताओं ने रामकथा की शक्तिमत्ता देखकर यह अनुभव किया कि आधुनिक घोर वैज्ञानिक अनास्था के युग में भी रामकथा के माध्यम से भारत अपना सांस्कृतिक संदेश सुना सकता है।[13]

समग्रतः आधुनिक हिन्दी रामकथा धारा ने संस्कृति के तत्त्वों को नवीन आलोक में देखा है। सामाजिक कुरीतियों का खंडन, सामाजिक समानता का पोषण, पारिवारिक आदर्शों की प्रतिस्थापना, नारी की प्रतिष्ठा, आर्थिक समानता, श्रम का महत्त्व आदि परम्परित मूल्यों को नवीन परिप्रेक्ष्य में प्रतिस्थापित किया गया। साथ ही शोषण की निंदा, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, राष्ट्रप्रेम, पाश्चात्य भोगवादी, साम्राज्यवादी नीति की निंदा, अधिकार चेतना जैसे नवीन मूल्यों की भी प्रतिष्ठा की गई है। मानवता के चरम विकास में इस काव्य का अमूल्य योगदान रहा है। आधुनिक रामकाव्य परम्परा की अनुभूति नहीं है, उसमें नवीन युगानुकूल जीवन के प्रतिमानों, मूल्यों को वहन करने की शक्ति भी है।

संदर्भ सूची :

1. पोद्दार, अरुण, रामावतार, (पृ. 73 से उद्धृत) / अवस्थी, डॉ.प्रमिला, कृत हिन्दी रामकाव्य : नये संदर्भ, चिन्तन प्रकाशन, कानपुर, सन् 1993 ई., पृ.263
2. शर्मा शेषमणि, कैकेयी, 'मणिरायपुरी' पृ. 44, उद्धृत वही, पृ.264
3. मेहता, नरेश, संशय की एक रात, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकार बम्बई, सन् 1962 ई., पृ.11
4. गुप्त, मैथिलीशरण, साकेत, लोक भारती प्रकाशन, इलाहबाद सन् 2008 ई., पृ.144
5. मिश्र, केदारनाथ, कैकेयी, 'प्रभात' उद्धृत कविता कोश वेब पेज से, 1 पृ.121
6. तुलसी, आचार्य, अग्नि परीक्षा, आदर्श साहित्य संघ, चूरू, सन् 1985 ई., पृ. 68
7. मेहता, नरेश, संशय की एक रात, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकार, बम्बई, सन् 1962 ई., पृ.15
8. गुप्त, मैथिलीशरण, लीला, (पृ. 40 से उद्धृत) / अवस्थी, डॉ.प्रमिला, कृत हिन्दी रामकाव्यः नये संदर्भ, चिन्तन प्रकाशन कानपुर, सन् 1993 ई., पृ.272
9. गुप्त, डॉ.जगदीश, शम्बूक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सन् 2013 ई., पृ. 45
10. मेहता, नरेश, प्रवाद पर्व, हिन्दी बुक सेंटर, नई दिल्ली, सन् 2012 ई., पृ. 30
11. पाण्डे, श्यामनारायण, जय हनुमान, (पृ. 39 से उद्धृत) / अवस्थी, डॉ.प्रमिला, कृत हिन्दी रामकाव्यः नये संदर्भ, चिन्तन प्रकाशन कानपुर, सन् 1993 ई., पृ. 185
12. मेहता, नरेश, संशय की एक रात, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकार, बम्बई, सन् 1962 ई., पृ. 65
13. अवस्थी, डॉ.प्रमिला, हिन्दी रामकाव्यः नये संदर्भ चिन्तन प्रकाशन कानपुर, सन् 1993 ई., पृ. 289